# इकाई 4 प्लेटो : शिक्षा (प्रस्तुतीकरण विषय : लोकतंत्र की समालोचना, स्त्रियाँ और अभिभावक, शिक्षा, सेंसरशिप)*

## संरचना


4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 शिक्षा का सिद्धांत
  4.2.1 शिक्षा की प्रणाली
    4.2.1.1 प्राथमिक शिक्षा
    4.2.1.2 उच्च शिक्षा
4.3 स्त्रियों पर विचार
  4.3.1 आलोचना
4.4 लोकतंत्र की समालोचना
4.5 सारांश
4.6 कुछ उपयोगी संदर्भ
4.7 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर


## 4.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप प्लेटो द्वारा वर्णन की गई शिक्षा की अवधारणा के बारे में पढ़ेंगे। यह इकाई स्त्रियों और अभिभावकता के विचार की एक प्रस्तावना और इसके अलावा लोकतंत्र की एक समालोचना भी पस्तुत करती है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप भिन्न – लिखित में सक्षम होंगे :

- शिक्षा के विचार को स्पष्ट करना,
- स्त्रियों और अभिभावकता पर विस्तृत विवरण देना और
- लोकतंत्र से संबंधित आलोचना का विवेचन करना जैसा कि प्लेटो द्वारा स्पष्ट किया गया है।


*डॉ अंकिता दत्ता, रिसर्च फेलो, इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ड अफेयर्स

## 4.1 प्रस्तावना

प्लेटो (428–347 ई. पू.) प्राचीन यूनानी विश्व और पाश्चात्य चिंतन के इतिहास की अत्यंत महत्वपूर्ण हस्तियों में से एक है। पश्चिम में राजनीतिक दर्शन का प्रारंभ प्राचीन यूनानियों और प्लेटो के साथ होता है। प्लेटो पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में सबसे प्रभावशाली लेखकों में से एक था। अपने लिखित संवादों में उसने अपने गुरु सुकरात के विचारों और तकनीकों पर विचार किया। प्लेटो के आदर्श राज्य में तीन प्रधान वर्ग होते हैं जो आत्मा के तीन हिस्सों के अनुरूप होते हैं। अभिभावक, जो दार्शनिक होते है, नगर पर शासन करते हैं; सहायक सैनिक होते हैं, जो उसकी रक्षा करते हैं, और सबसे निम्न वर्ग में उत्पादक होते हैं (किसान, कारीगर इत्यादि)। प्लेटो के समाज की प्रकृति अत्यंत संरचित, श्रेणीबद्ध और मेघातंत्रीय थी जिसमें सभी से अपेक्षा की जाती थी कि वे उन्हें सौंपे गए दायित्वों को निभाएँ। उसने सम्पत्ति, लिंग और जन्म को विशेषाधिकारों और उपहारों के वितरण के लिए मानदंडों के तौर पर वर्जित किया। शिक्षा का ढाँचा इस प्रकार तैयार किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को विस्तृत प्रशिक्षण के माध्यम से अपनी क्षमता को विकसित करने का अवसर मिले। सुजनन विज्ञान का संचालन अत्यंत गोपनीयता के साथ किया जाना था चूंकि केवल दार्शनिक शासक को जानकारी होगी और साथियों का सावधानी से चयन यह सुनिश्चित करेगा कि आनुवंशिक प्रतिभा संतान तक पहुँचे। आगामी खंडों में, इन वर्गों की शिक्षा से जुड़े प्लेटो के विचार, स्त्रियों पर उसके विचार और उसकी लोकतंत्र की समालोचना का विस्तार से विवेचन किया गया है।

## 4.2 शिक्षा का सिद्धांत

प्लेटो के अनुसार, शिक्षा रूपांतरण का मामला होता है, अर्थात् आभास के जगत से यथार्थ के जगत की ओर पूर्ण परिवर्तन। प्लेटो के शब्दों में "आत्माओं के रूपांतरण का अर्थ आत्मा की आँख में दृष्टि की शक्ति डालना नहीं होता, जो कि उसके पास पहले से होती है, बल्कि यह सुनिश्चित करना होता है कि गलत दिशा में देखने के बदले, उसे उस दिशा में मोड़ा जाए, जैसे उसे होना चाहिए। चूंकि हर व्यक्ति अपनी आत्मा में सीखने के सामर्थ्य से युक्त होता है, आवश्यकता यह होती है कि हमारी आत्मा को ऐसी अच्छी दिशा में मोड़ा जाए तो ज्ञान प्राप्ति के लिए एक अच्छे वातावरण को तैयार कर सके। ऐसा देखा गया है कि आप जितना ऊपर जाते हैं, आपको उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त होता है। शिक्षा प्राप्ति की पूरी प्रक्रिया में शिक्षकों और छात्रों की आवश्यकता होती है; शिक्षक ही वो होते हैं जो पढ़ाए जाने वाले विषय को जानते हैं। शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रिया का सुझाव छात्रों और शिक्षकों के बीच चर्चा के रूप में दिया गया था। प्लेटो का शिक्षा का विचार मूल रूप से उनके लिए था जिन्हें राजनेता बनना था। उसने राजनेता पर बल इसलिए दिया ताकि अक्षम नेताओं से बचाव हो सके; क्योंकि एक राज्य इन राजनेताओं के सुपुर्द किया जाएगा, और यदि वे शिक्षित न हों तो वे देश या राज्य को एक भयानक स्थिति में डाल सकते हैं। शिक्षा प्रणाली की संपूर्ण श्रृंखला का कुछ हिस्सा शारीरिक, कुछ बौद्धिक और कुछ नैतिक होगा। यदि एक व्यक्ति नैतिक प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकता तो वह अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए समाज के हित का बलिदान कर सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य आत्मा को प्रकाश की ओर मोड़ना होता है। प्लेटो ने कहा कि शिक्षा का मूल कार्य आत्मा में ज्ञान डालना नहीं होता, बल्कि आत्मा में निहित प्रतिभा को उजागर करते हुए उसे सही वस्तुओं की ओर निर्देशित करना होता है। शिक्षा पर प्लेटो का यह स्पष्टीकरण, उसके शिक्षा के उद्देश्य पर विशेष जोर डालता है और अपने शिक्षा के सिद्धांत की शाखाओं को स्पष्ट करने के लिए पाठकों का सही दिशा में मार्गदर्शन करता है। "लॉज़" में वह कहता है "शिक्षा सबसे पहली और सबसे अच्छी वस्तु है जो सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्त हो सकती है।" प्लेटो के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य समाज की सुरक्षा और व्यक्ति के लिए आहार, दोनों का कल्याण होता है। उसका मत था कि शिक्षा को उन लोगों में प्रत्यय के बोध विकसित करना चाहिए, जिनके पास उन्हें सौंपे गए दायित्वों को निभाने की क्षमता और संकल्प होता है। इस प्रकार, शिक्षा का लक्ष्य एक व्यक्ति को उत्तम भलाई का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाना होता है। प्लेटो के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति और समाज, दोनों का कल्याण होता है। उसका मार्गदर्शक सिद्धांत है कि "शिक्षा में ऐसी किसी वस्तु को दाखिल नहीं किया जाना चाहिए जो सद्‌गुण के प्रोत्साहन में सहायक न हो।" वी. के. महेश्वरी के अनुसार, प्लेटो द्वारा 'लॉज़' में शिक्षा का निरूपण रिपब्लिक में उसके निरूपण से भिन्न है। 'लॉज़' में शिक्षा सार्वभौमिक है और रिपब्लिक के समान अभिभावक वर्ग तक सीमित नहीं है और अनिवार्य है। बालकों को स्कूल केवल इसलिए नहीं आना चाहिए क्योंकि उनके माता–पिता चाहते हैं बल्कि शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। प्लेटो का विश्वास था कि शिक्षा का सर्वोच्य लक्ष्य अच्छाई का ज्ञान होता है और एक व्यक्ति का एक श्रेष्ठतर मनुष्य बनने के लिए पोषण करना होता है। शिक्षा एक व्यक्ति को परम यथार्थ के अवलोकन के लिए तैयार करती है और यही कारण है कि आरंभ से शिक्षा प्रदान करना भविष्य के लिए तैयारी होती है।

### 4.2.1 शिक्षा की प्रणाली

प्लेटो का विश्वास था कि यदि किशोर मनों को सही प्रकार निर्देशित किया जाए तो उनका निर्माण सरलतापूर्वक किया जा सकता है। उसने मानव मन की अद्‌भत ग्रहणशील क्षता पर बल दिया, जिसके कारण, उसके अनुसार, व्यक्ति के समग्र विकास में प्रारंभिक शिक्षा की निर्णायक भूमिका रहती है। इस स्थिति में, शिक्षक व्यक्ति को इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए प्रशिक्षित करने का प्रयास कर सकता हैं, चूंकि आत्मा के गैर–विवेकी पहलुओं का नियंत्रण और उपयोग, विवेक के पूर्ण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण पूर्वशर्त थी। प्लेटो के अनुसार, प्राथमिक शिक्षा प्रथम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक थी, जबकि उच्च शिक्षा ने तर्कशक्ति के विकास को सुनिश्चित किया।

#### 4.2.1.1 प्राथमिक शिक्षा

प्लेटो के अनुसार, प्राथमिक शिक्षा अठारह वर्ष की आयु तक दी जानी थी और अभिभावक वर्ग तक सीमित होनी थी, उसके बाद दो वर्ष के लिए अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण और तत्पश्चात् उत्तीर्ण होने वालों के लिए उच्च शिक्षा। जहाँ एक ओर प्राथमिक शिक्षा ने आत्मा को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाया, वहीं उच्च शिक्षा ने आत्मा को उसे प्रबद्ध करने वाले सत्य को खोजने में मदद की। प्लेटो का विश्वास था कि शिक्षा सात वर्ष की आयु में आरंभ होनी चाहिए और इससे पहले, नैतिक शिक्षा के लिए बच्चों को अपनी माताओं के साथ रहना चाहिए और लड़के–लड़कियों को एक दूसरे के साथ खेलने दिया जाना चाहिए। प्लेटो की राय थी कि पहले दस वर्षों के लिए प्रधान रूप से शारीरिक शिक्षा होनी चाहिए। अर्थात्, प्रत्येक विद्यालय में एक व्यायामशाला और एक खेल का मैदान होना

चाहिए ताकि बच्चों का शरीर गठन और स्वास्थ्य का विकास हो सके और उन्हें किसी भी रोग का प्रतिरोधी बनाया जा सके। इस शारीरिक शिक्षा के अलावा, प्लेटो ने संगीत का भी सुझाव दिया ताकि उनके चरित्र में एक विशिष्ट परिष्कृति लाई जा सके और उनकी आत्मा और शरीर को शालीनता और स्वास्थ्य प्रदान किया जा सके। प्लेटो ने अंकगणित, इतिहास और विज्ञान जैसे विषयों को भी प्रदिष्ट किया। शिक्षा के विषयवस्तु में व्यायाम, साहित्य, संगीत और प्राथमिक अंकगणित शामिल थे। व्यायाम शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अनिवार्य होता है। संगीत को शिक्षा के माध्यम के रूप में, आध्यात्मिक विकास के एक मार्ग के रूप में चुना जाता है और इस अवस्था के लिए प्रत्यय ही शिक्षा को विषयवस्तु होते है। छह वर्ष की आयु के पश्चात् लड़कियों और लड़कों को अलग कर देना चाहिए और लड़कों को लड़कों के साथ और लड़कियों को लड़कियों के साथ खेलना चाहिए और दोनों को विभिन्न प्रकार के हथियारों का प्रयोग सिखाया जाना चाहिए।

विवेक को सर्वोच्च बनाने हेतु, अभिभावक वर्ग में अनिवार्य सद्गुणों को प्रोत्साहित करने के लिए, प्लेटो ने साहित्य और संगीत के सेंसरशिपक का सुझाव दिया। काव्य, कहानियों और किस्सों का सेंसरशिप यह सुनिश्चित करने के लिए प्रारंभ किया गया कि प्रभावनीय किशोरों के कन का हानिकारक विचारों से साक्षात्कार न हो। प्लेटो का विशेष आग्रह था कि बच्चों को मृत्यु का डर नहीं होना चाहिए ; अन्यथा वे युद्धभूमि में आवश्यक साहस का विकास नहीं कर पाएँगे। बच्चों को, उनकी अच्छी नैतिक परवरिश को सुनिश्चित करने के लिए, देवताओं और महान हस्तियों के बारे में कहानियों से परिचित कराया जाना चाहिए। प्लेटो का विचार था कि बच्चों के जीवन से सभी अवगुणों को बहिष्कृत किया जाना चाहिए। उचित सद्गुणों में प्रशिक्षण अभिभावक वर्ग के उत्तम सदस्यों का निर्माण कर पाएगा। इन विषयों मं शिक्षा के बाद दो वर्ष का अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण होना था। अभिभावकों को योद्धाओं के रूप में निपुण बनाया जाता था। आत्मा के सुदृढ़ीकरण के लक्ष्य से भोग–विलास और असंयम वर्जित होता था। प्लेटो ने उस एथेन्सी प्रथा को दोहराया जिसने सत्रह और बीस वर्ष की आयु के बीच अनिवार्य सैनिक सेवा की उपलब्धि की। प्राथमिक शिक्षा ने उन आत्माओं को दक्ष बनाया जो अभ्यास और अनुकूलन के ग्रहणशील थे।

### 4.2.1.2 उच्च शिक्षा

प्लेटो के अनुसार, बीस वर्ष की आयु में, बालक को एक परीक्षा देनी होगी जो यह निर्धारित करेगी कि उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए अथवा नहीं। जो परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने थे, उन्हें समुदायों में गतिविधियों को अपनाने के लिए कहा जाता था जैसे व्यापारी, मुंशी, श्रमिक, किसान आदि के समान। ये चयन उस आयु और अवस्था के अनुसार होते थे, जिस पर इन कि विद्यार्थियों को दाखिल किया जाता था। प्लेटो ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा शीघ्र प्रारंभ होनी चाहिए। कार्यक्रम में पहला पाठ्यक्रम दस वर्ष तक चलेगा, पच्चीस वर्ष की आयु से लेकर तीस वर्ष तक, और इस आयु में उन्हें गणितीय परिकलन में प्रशिक्षण मिलता है और अगले दस वर्षों तक चलता है। इसकी समाप्ति के बाद, चयनित व्यक्तियों को द्वंद्वात्मक पद्धति की तैयारी के रूप में गणितीय प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। प्लेटो ने एक व्यक्ति द्वारा उच्च शिक्षा में प्रवेश पाने के लिए आवश्यक गुणों पर विशेष बल दिया है। उसने घोषणा की कि केवल उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो सबसे अधिक आश्वस्त, साहसी, निष्पक्ष हों और वे निके पास अपनी शिक्षा को सुसाध्य बनाने के प्राकृतिक उपहार हों। प्लेटो ने द्वंद्वात्मक पद्धति के अध्ययन

को तीस से पैंतीस वर्ष की आयु तक के लिए सीमित किया क्योंकि उसका मानना था कि एक व्यक्ति को द्वंद्वात्मक पद्धति में, विशेष रूप से यथार्थ के परम सिद्धांतों के बारे में अध्ययन करने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व होना चाहिए। अगली अवस्था में, पैंतीस से पचास वर्ष की आयु तक, प्लेटो के अनुसार युद्ध का कमान संभालने के लिए और राज्य के ऐसे पदों को संभालने के लिए जो उसके लिए उपयुक्त हों, एक व्यक्ति एक दार्शनिक या शासक के रूप में व्यावहारिक जीवन में लौटने के लिए तैयार होता है। पचास वर्ष की आयु तक पहुँचने पर, एक व्यक्ति को अपना जीवन "अच्छाई" के ध्यान में व्यतीत करना चाहिए क्योंकि उसके मुख्य लक्ष्य का विषय दर्शन होना चाहिए और उसे राजनीति में भाग लेना चाहिए, और अपने कर्त्तव्य के रूप में लोगों की भलाई के लिए शासन करना चाहिए। शिक्षा के प्रति प्लेटो के उपागम में निम्नलिखित पहलू शामिल है : विज्ञान और कलाएँ, जिन्हें शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को संचारित किया जाना था; नैतिक सद्‌गुण, शिक्षकों और छात्रों के लिए अनिवार्य, और अंत में, राजनीतिक संस्थाएँ, जो सीखने की प्रक्रिया से जुड़ी थीं। प्लेटो और अरस्तू, दोनों के लिए शिक्षा का सच्चा लक्ष्य नागरिक सद्‌गुणों के मूल्यों को विकसित करना था। उन्होंने एक ऐसे शैक्षणिक पाठ्‌क्रम का ढाँचा तैयार किया जो "राजनीति शास्त्र के अध्ययन के स्थान पर एक नैतिक उदारवादी शिक्षा प्रदान करेगा। उन्होंने जिसे चाहा, वह एक मनोदशा थी जो सार्वजनिक मुद्दों पर एक निष्पक्ष, जिम्मेदार और आत्म–संयम तरीके से प्रतिक्रिया देगी।" दोनों का मानना था कि नागरिकों में अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति बोध संचारित करने के द्वारा, शिक्षा उस भ्रष्टाचार और अस्थिरता के लिए असरदार उपचार होगा जो उनके समय में राज्यों को प्रभावित कर रहे थे। उन्हें पक्का विश्वास था कि एक शिक्षा प्रणाली जो राज्य द्वारा नियंत्रित और नियमित हो, वह नागरिकों को राज्य की परम्पराएँ और कानून सिखाएगी।

## 4.3 स्त्रियों पर विचार

रिपब्लिक में, सुकरात और ग्लोकॉन के बीच संवाद द्वारा प्लेटो यह सुझाव देता है कि अभिभावक स्त्रियों को वही कार्य करना चाहिए जो पुरूष अभिभावक करते हैं। कुछ लोग परिपाटी का अनुसरण कर सकते हैं और यह आपत्ति उठा सकते हैं कि स्त्रियों को भिन्न कार्य दिए जाने चाहिए क्योंकि वे प्राकृतिक रूप से पुरूषों से भिन्न होती हैं। फिर भी, प्लेटो के अनुसार, पुरूषों और स्त्रियों के बीच प्राकृतिक अंतर प्रासंगिक नहीं होते जब मामला नगर की रक्षा और शासन के कार्य का हो। दोनों ही लिंग स्वाभाविक रूप से इन कार्यों के लिए उपयुक्त होते हैं। वह आगे यह तर्क देता है कि इस तरीके से स्त्रियों को भी पुरूषों को दिए जाने वाले कार्य करने की अनुमति देना एक व्यवहार्य ही नहीं बल्कि सर्वोत्तम कदम भी होता है। यह ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कार्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त लोग उसे करेंगे।

वह आगे चलकर यह सुझाव देता है कि अभिभावक वर्ग के सदस्यों के बीच अलग परिवार नहीं होने चाहिए : अभिभावकों का सभी स्त्रियों और बच्चों पर साझा हक होगा। प्लेटो ने अभिभावक वर्ग के लिए निजी परिवार और सम्पत्ति के विचार का उन्मूलन किया क्योंकि यह शासकों के बीच भाई–व्यवहारों को प्रोत्साहित करना है। प्लेटो के लिए, राजनीति का अर्थ–अपने निजी स्वार्थों को प्रोत्साहित करना नहीं बल्कि, सामान्य हित को प्रोत्साहित करना था। प्लेटो ने प्रस्तावित किया कि अभिभावक वर्ग के सदस्यों को आपस में सम्मिलित रूप से रहना चाहिए जैसे बैरकों में सैनिक रहते हैं। प्लेटो की योजना इस

विचार पर आधारित थी कि प्राकृतिक प्रतिभा और क्षमताओं की दृष्टि से स्त्रियाँ और पुरूष एक समान थे। प्लेटो के पत्नियों के साम्यवाद में दो विचार सन्निहित थे : परम्परागत विवाह का सुधार और स्त्रियों का उद्धार। इसे प्राप्त करने के लिए प्लेटो ने स्थायी एकपत्नीक विवाहों और निजी परिवारों के उन्मूलन को प्रस्तावित किया। यह केवल अभिभावक स्त्रियों तक सीमित था। सर्वप्रथम, प्लेटो के अनुसार, परम्परागत विवाह का परिणाम स्त्रियों की अधीनता, दमन और एकांतता था। प्रेम और पारस्परिक आदर पर आधारित, एक आध्यात्मिक मिलन के रूप में विवाह के विचार को उसने अस्वीकार किया। फिर भी, मानव जाति के प्रजनन और निरंतरता को सुनिश्चित करने के लिए विवाह अनिवार्य था। अतः उसने मात्र संतान–प्राप्ति के उद्देश्य से अस्थायी यौन संबंधों की वकालत की। इसके अतिरिक्त प्लेटो ने संतान उत्पत्ति के लिए पुरूषों और स्त्रियों, दोनों की आयु निर्धारित की। उसने कहा कि स्त्रियों के लिए संतान उत्पत्ति की उचित आयु 20 और 40 वर्ष के बीच होनी चाहिए और पुरूषों के लिए 25 और 55 के बीच क्योंकि इस अवस्था में, शारीरिक और बौद्धिक बल अधिक होता है। प्लेटो ने इस बात का समर्थन किया कि सर्वश्रेष्ठ पुरूष अभिभावकों को सर्वश्रेष्ठ स्त्री अभिभावकों के साथ यौन संबंध की अनुमति भी दी जाएगी ताकि उन जैसी प्रकृति की संतान को पैदा किया जा सके। एक बार जन्म लेने के बाद, इन बच्चों को पालन–पोषण के लिए एक बाड़े में भेज दिया जाएगा जहाँ इनकी देखभाल उपचारिकाओं द्वारा की जाएगी और माता–पिता को यह जानने की अनुमति नहीं होगी कि उनके बच्चे कौन से हैं। दार्शनिक शासक को छोड़कर, किसी अन्य को बच्चों के असली माता–पिता के बारे में ज्ञान नहीं होगा।

द्वितीय, प्लेटो पितृसत्तात्मक परिवार से स्त्रियों की मुक्ति को इस आधार पर बढ़ावा देता है कि सभी पहलुओं में उनकी पुरूषों के साथ समावता होती है, यदि उन्हें परवरिश, शिक्षा और अवसर की समान परिस्थितियाँ प्रदान की जाएँ। अतः, स्त्रियों को घरेलू कामकाज़ तक सीमित रखने का अर्थ संभावित सामाजिक प्रतिभा के आधे हिस्से को बर्बाद करना था। उसका कथन है कि "अब तक स्त्रियों की स्थिति को नियमित करने में हम एक खतरनाक प्रस्ताव के बीच से सुरक्षित निकलने का दावा कर सकते हैं कि पुरूष और स्त्री अभिभावकों के सभी व्यवसाय समान होंगे। इस तर्क की निरंतरता एक आश्वासन है कि यह योजना अच्छी है और व्यवहार्य भी है।" और इसके बाद से, वह शासक वर्गों के लिए परिवार की संस्था के ही उन्मूलन की अनिवार्य आवश्यकता का तर्क देता है। परिवार के उन्मूलन का समर्थन वह इस आधार पर करता है कि परिवार का संबंध सम्पत्ति से होता है और सम्पत्ति के ही जितना व्याकुल और भ्रष्ट करने वाला होता है। शासकों को पारिवारिक जिम्मेदारियों में समय और ऊर्जा नष्ट नहीं करना चाहिए, बल्कि सत्य की खोज के प्रति अपने को समर्पित करना चाहिए, अर्थात् अच्छाई के विचार को समझने में।

प्लेटो द्वारा पत्नियों और सम्पत्ति के साम्यवाद के अपने विचारों को प्रस्तुत करने के पीछे कारणों में निम्नलिखित शामिल थे : कि जो लोग राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते हैं, उनके कोई आर्थिक उद्देश्य नहीं होने चाहिए, और जो लोग आर्थिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, उनकी राजनीतिक शक्ति में कोई हिस्सेदारी नहीं होनी चाहिए। उसने तीसरे सामाजिक वर्ग को, फिर भी, निजी परिवार और सम्पत्ति का आनंद प्राप्त करने की अनुमति दी, परन्तु अभिभावकों के कड़े निरीक्षण के अर्न्तगत। उसने अभिभावकों और कारीगरों, दोनों को एक नैतिक आदर्श के अधीन रखा : राज्य का कल्याण। यद्यपि अभिभावकों को नियंत्रण और शासन का कार्य सौंपा जाना था, उन्हें कठोर और अतिसंयमी जीवन बिताना

पड़ता था। कारीगरों को राजनीतिक प्रक्रियाओं में दखल देने या भाग लेने का अधिकार नहीं था परन्तु अभिभावकों के विपरीत, उन्हें भावात्मक संबंधों और सम्पत्ति का आनंद मिलता था। अपनी ओर से, प्लेटो ने पुरस्कार और वंचन की दृष्टि से, समाज के दोनों हिस्सों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया। उसके आदर्श राज्य की विशेषताओं में वर्ग, साम्यवाद, शिष्टाचार, नियंत्रण, संतोष और सामंजस्य शामिल थे।

### 4.3.1 आलोचना

पत्नियों के साम्यवाद के माध्यम से प्लेटो मानव समाज की धारणा और परिपाटियों को ही चुनौती देता है। यद्यपि प्लेटो के लिए उसकी योजना मुक्तिकारी प्रतीत हो सकती है, इसका तात्पर्य उल्टे एक अत्यधिक प्रतिबंधक और अनुशासित समाज है जिसमें निजता और वैयक्तिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। अरस्तू ने इस विचार के प्रति अपना मतभेद प्रकट करते हुए इस बात पर बल दिया कि परिवार और निजी सम्पत्ति व्यक्ति की खुशी और राज्य के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण होते है। अरस्तू ने परिवार को एक प्राकृतिक संस्था के रूप में देखा और उसका उन्मूलन करने में प्लेटो की समझदारी पर सवाल उठाया। पॉपर ने प्लेटो को व्यक्तिवाद विरोधी और सामाजिक परिवर्तन–विरोधी कहा। उसने कहा कि प्लेटो द्वारा अभिभावक वर्ग को सम्पत्ति के स्वामित्व से वंचित रखना और फिर, परिवार और बच्चों से वंचित रखना व्यक्ति के हितों के विरुद्ध है। पॉपर की राय में, प्लेटो के आदर्श राज्य में, व्यक्ति राजय के पण्य वस्तुओं या उपकरणों या यंत्रों के समान होते हैं जो हमेशा उस व्यक्ति के निर्देश के अधीन होते हैं जो राज्य को नियंत्रित करना है। प्लेटो अपने आदर्श राज्य को ऐसे कायम रखना चाहता था जैसे कि उसे मूलरूप से स्थापित किया गया था। वह अपने आदर्श राज्य में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहता था। पत्नियों और सम्पत्ति के साम्यवाद पर उसके विचार, जिस प्रकार उसने सुजनन विज्ञान की वकालत की, उसकी शिक्षा की योजना, इन सबने सामाजिक परिवर्तन के बारे में उसकी अनिच्छा को प्रतिबिंबित किया।

### अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

**नोटः** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।
ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) स्त्रियों पर प्लेटो के विचारों का विवेचन करें।

.....

.....

.....

.....

## 4.4 लोकतंत्र की समालोचना

प्लेटो ने लोकतंत्र को, राजनीतिक पतन के दौर से गुज़र रहे समाजों के लिए निरंकुशता की दिशा में अपरिहार्य अवरोहण के एक कदम के रूप में देखा। प्लेटो स्पष्ट करता है कि लोकतंत्र "बहुमत की निरंकुशता" और जनोत्तेजकता द्वारा शासन से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। प्लेटो द्वारा लोकतंत्र की समालोचना को समझने के लिए, आत्मा और नगर के

बीच उसके द्वारा प्रस्तुत समरूपता की रूपरेखा देना जरूरी है। इसे वह रिपब्लिक की पुस्तक 11 में प्रस्तावित करना है जहाँ उसका कहना है "आइए सबसे पहले नगर में न्याय और अन्याय की प्रकृति की जाँच करें ....."। शासन के सर्वाधिक न्यायपूर्ण रूप, कुलीननतंत्र को, दार्शनिक राजा से जोड़ा जाता है जिसके पास एक न्यायपूर्ण समाज पर शासन करने के लिए आवश्यक गुण होते हैं।

प्लेटो चार प्रकार के समाजों का वर्णन करता है : पहला, एक सम्मानतंत्रात्मक समाज जहाँ साहसी सैनिकों ने निर्णय लेने के विशेषाधिकार को, सही अर्थों में केवल उस समाज के बेहतर–शिक्षित शासकों का होता है, अपने लिए हथिया लियस है। अतः एक सम्मानतंत्रात्मक व्यक्ति वह होता है जो विवेकपूर्ण तरीके से उसे चुनने के बजाय जो वास्तव में उत्तम होता है, अपने निजी सम्मान की रक्षा से अधिक चिंतित होता है। दूसरा, एक अल्पतंत्रीय सरकार जिसमें अभिभावकों के दोनों वर्गों को कुछ शक्तिशाली और सम्पत्तिवान नागरिकों से युक्त एक शासक समूह की सेवा में लगाया जाता है। समरूपता की दृष्टि से, एक अल्पतंत्रीय समाज वह होता है जहाँ प्रत्येक विचार व क्रिया और अधिक सम्पत्ति को अर्जित करने के असंयमी लक्ष्य के प्रति समर्पित होता है। तीसरा, एक लोकतांत्रिक सरकार जहाँ सभी नागरिकों के लिए समानता के वादे किए जाते हैं परन्तु वह केवल अराजकता प्रदान करती हैं। लोकतंत्र में सदस्य केवल निजी स्वार्थों की तलाश में दिलचस्पी रखते है। चौथा, अत्याचारी समाज जहाँ एक अकेले व्यक्ति ने नियंत्रण प्राप्त कर लिया हो, अराजकता के स्थान पर व्यवस्था का पुनर्स्थापन किया हो, परन्तु पूरे नगर के हितों के स्थान पर केवल निजी कल्याण को लाभ पहुँचा रहा हो। प्लेटो की राय में, ऐसा माना जाता है कि आदर्शतः कुशल तरीके से संगठित एक समाज में कुलीनतांत्रिक शासन होता है। इसी प्रकार, एक कुलीनवर्गीय व्यक्ति वह होता है जिसकी विवेकी, जीव और सुधावर्धक आत्माएँ सुचारू रूप से एक साथ कार्य करती हैं। ऐसी सरकारें और लोग सामाजिक और निजी स्तरों पर विशुद्ध न्याय के सर्वाधिक सच्चे उदाहरण होते हैं।

प्लेटो के अनुसार, कुलीनतंत्र को, मानव प्रकृति की दोषक्षमता के कारण अपरिहार्य रूप से शासन के एक निम्नतर रूप के सामने झुकना पड़ता है। एक गुट "लोहा और काँसा" होता है जो सम्पत्ति के संचय की ओर आकर्षित होता है। दूसरा "सोना और चाँदी" होता है जो "विपक्ष को सद्‌गुण और विरासत में मिली व्यवस्था में वापस लाने" का व्यर्थ प्रयास करना है। गुटबंदी सम्मानतंत्र की ओर कदम का प्रतिनिधित्व करता है, कुलीनतंत्र और अल्पतंत्र के बीच एक समझौते का। परम अच्छाई जो कुलीनतंत्रीय शासन के अन्तर्गत विवके था, अब अल्पतंत्रीय आत्मा की आड़ में सम्पत्ति की प्राप्ति बन जाता है। तत्पश्चात् (अल्पतंत्र का परिवर्तन लोकतंत्र में होता है, क्योंकि कुछ लोगों के हाथों में सम्पत्ति का संचय नागरिकों के एक विस्तारशील निम्न वर्ग के बीच असंतोष उत्पन्न करता है। प्लेटो ने लोकतंत्र के आरंभ का वर्णन "शास्त्रों के बल द्वारा या आतंक के प्रयोग द्वारा जो विपक्ष को पीछे हटने पर मजबूर करता है" के रूप में किया है। बाद की सर्वोपरि स्वतंत्रताएँ जिनका लोकतंत्र समर्थन करता है, वे नगर को क्षति पहुँचाती हैं, क्योंकि लोकतांत्रिक नगर की "सहनशीलता" अत्याचार की अभिव्यक्ति को सक्षम बनाती है। प्लेटो लोकतंत्र को अल्पतंत्र से अधिक खतरनाक मानता है क्योंकि यद्यपि दोनों समान हानिकारक विशेषताओं को साझा करते है लोकतांत्रिक नगर ने "अराजकता को गले लगाया है" और लोगों का वह वर्ग जो गरीबों को धनी शासकों के विरुद्ध प्रेरित करता है, प्रमुख होता है। अंत में, अत्याचार में अवरोहण पूर्वाक्त जनोत्तेजक नेता के प्रवेश द्वारा चिन्हित किया जाता है, जिसे

लोकतंत्र की "एक व्यक्ति को लोगों के रक्षक और समर्थक के रूप में ऊपर उठाने और महिमामंड़ित करने की प्रवृत्ति" द्वारा लाभ पहुँचता है। प्लेटो द्वारा लोकतंत्र की समालोचना यह है कि लोकतंत्र विवके और ज्ञान की खोज को एक अंतर्निहित अच्छाई के अर्थ में महत्व नहीं देता। इसके बजाय, लोकतंत्र विफलताओं से ग्रस्त हो जाता है क्योंकि यह धन और सम्पत्ति संचय को सर्वोच्च अच्छाई के रूप में प्राथमिकता देता है। प्लेटो के अनुसार, इससे भी बुरी यह है कि लोकतंत्र पूर्ण स्वतंत्रता (जिसे प्लेटो "अराजकता" कहता है) और अनावश्यक "क्षुधाओं" को गले लगाता है जो लोकतांत्रिक आत्मा के नियंत्रण के लिए शासक के सद्गुणी शासन की जिम्मेदारियों को निकाल फेंकती हैं।

यह राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की एक साझा कड़ी थी जो सुकरात, प्लेटो और अरस्तू में पाई जाती है। इन तीनों ने एक कुलीतंत्र के मूल्यों, जीवन शैली और दृष्टिकोणों की रक्षा करने की बात की जो पत्तनोन्मुख था। ऐसा इसलिए था क्योंकि प्लेटो उस समय लेखन कर रहा था जब एथेन्स पेलोपोनेसियन युद्ध में पराजय के बाद एक चौराहे पर खड़ा था। प्लेटो के अनुसार, कुलीनतंत्र का पुनरुद्धार और सुधार महत्वपूर्ण था ताकि वह फिर एक बार नागरीय जीवन का आधार बन सके। इसे व्यापारियों, कारीगरों और सौदागरों के नेतृत्व वाली लोकतांत्रिक क्राँति के प्रसार और साथ ही एथेन्स के समाज में व्याप्त बढ़ते हुए भौतिकवाद और व्यक्तिवाद का मुकाबला करने के लिए सवश्रेष्ठ तरीके के रूप में देखा गया। प्लेटो ने लोकतंत्रीकरण को नैतिक भ्रष्टाचार और निम्नीकरण के समान देखा और मानव जीवन की सामान्य गुणवत्ता सुधारने और उसमें आमूल परिवर्तन लाने का प्रयास किया। रिपब्लिक, एक प्रकार से, उस चीज़ का खंडन था जिसे प्लेटो ने एथेन्स की जीवन शैली और उसके सहभागी लोकतंत्र के रूप में देखा। उसने यूनानी पुरूष वयस्कों द्वारा राजनीतिक प्रक्रियाओं में सहभागिता और राजनीतिक मत के निर्माण को अनावश्यक और बेढ़ंगा कहते हुए टाल दिया। उसके अनुसार, लोकतंत्र राजनेताओं की अयोग्यता के सिवाय कुछ नहीं था जिसने गुटवाद, हिंसा, और पक्षपाती राजनीति को उत्पन्न किया जिसका परिणाम राजनीतिक अस्थिरता थी। प्लेटो की राय में, लोकतंत्र ने अत्यधिक प्रतिभाशाली व्यक्तियों को महत्व नहीं दिया।

लेकतंत्र पर उसकी टिप्पणियों के लिए, प्लेटो की आलोचना की गई है। उदारहण के लिए इज़ायहा बर्लिन ने ध्यान दिलाया कि प्लेटो व्यक्ति को चयन की स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता और एक समाज के भीतर बहुलवाद या विभिन्न मूल्य प्रणालियों और जीवन शैलियों को स्वीकृति नहीं देता। जहाँ तक उसकी बात है, पॉपर ने प्लेटो का वर्णन व्यक्ति–विरोधी, मानवतावाद–विरोधी, और लोकतंत्र विरोधी के रूप में किया जिसका लक्ष्य समस्त सामाजिक विकास और परिवर्तन को रोकना है। इसे एक ऐसे समाज की स्थापना द्वारा प्राप्त किया गया जो अनुशासित, श्रेणीबद्ध और असमान था, जहाँ एक व्यक्ति का महत्व सामाजिक समष्टि के प्रति उसके द्वारा योगदान पर आधारित था। प्लेटो के आदर्श राज्य में शासकीय अभिजन का हित ही महत्वपूर्ण था। पॉपर के अनुसार, इसे सेंसरशिप की मदद से, शिक्षा में नवाचार पर प्रतिबंध, विधि–निर्माण, और प्रचार द्वारा प्रबलित किया गया। राजनीतिक दृष्टि से इस राज्य ने पूर्ण नियंत्रण का प्रयोग किया और आर्थिक दृष्टि से, यह आत्मनिर्भर राज्य था।

## अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

**नोटः** i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) प्लेटो द्वारा चर्चा किए गए समाजों, के चार प्रकारों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

## 4.5 सारांश

प्लेटो पेलोपोनेशियन युद्ध के दौरान बड़ा हुआ जिसका आरंभ उसके जन्म से पूर्व हुआ और उसके 23 वर्ष की आयु का होने तक जारी रहा। युद्ध के दौरान पराज्य के कारण एथेन्स के उत्साहभंग का परिणाम एक अल्पतंत्रीय क्राँति थी, जिसके बाद एक क्रूर निरंकुश शासन आया जिसने अंत में एक लोकतांत्रिक संविधान की पुनर्स्थापना के लिए मार्ग निकाला। लोकतंत्र पर उसके विचार रिपब्लिक में भली–भांति स्पष्ट किए गए हैं और प्लेटो के चिंतन मं हमे लोकतंत्र की सबसे तीव्र समालोचना मिलती है जिसे उसने राजनीतिक पतन के दौर से गुज़र रहे समाजों के लिए निरंकुश शासन की दिशा में अपरिहार्य अवरोहण के एक कदम के रूप में देखा। प्लेटो ने लोकतंत्रीकरण को नैतिक भ्रष्टाचार और निम्नीकरण के समान देखा और मानव जीवन की सामान्य गुणवत्ता को सुधारने और उसमें आमूल परिवर्तन लाने का प्रयास किया। रिपब्लिक एक प्रकार से उस चीज़ का खंडन था जिसे प्लेटो ने एथेन्स की जीवन शैली और उसके सहभागी लोकतंत्र के रूप में देखा।

इसके दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है, उसका शिक्षा का सिद्धांत। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्लेटो ने 'दि अकादमी' की 387 ई. पू. में स्थापना की जो यूनान में उच्च शिक्षा की पहली संस्था थी। यह यूनान में बौद्धिक केंद्र बना और यूरोप के इतिहास में प्रथम विश्वविद्यालय के समान था। रिपब्लिक में, प्लेटो इस संबंध में एक सिद्धांत प्रस्तुत करना है कि व्यक्ति और राज्य दोनों के लिए शिक्षा का क्या अर्थ है, उन लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका ध्यान केंद्रित करते हुए जिन्हें राज्य के भावी अभिभावक को शिक्षित करने के लिए सामग्री का ध्यानपूर्वक चयन करना होगा। प्लेटो का पाठ्यक्रम ध्यानपूर्वक संयोजित किया गया था ताकि उसमें आत्मा के लिए प्रशिक्षण (संगीत) और शरीर के लिए प्रशिक्षण (व्यायाम) शामिल किया जा सके, जहाँ अधिक कठिन शैक्षणिक विषयों को तब जोड़ा जाएगा जब बच्चा विकास की दृष्टि से तैयार हो। उसकी शिक्षा प्रदान करने की संरचना में जो स्पष्ट है वह यह है कि प्लेटो ने एक प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन किया, शिक्षा जो जीवन में अपनी भूमिका की पूर्ति करने के लिए हो, उत्पादकों, अभिभावकों और दार्शनिक राजाओं के लिए शिक्षा, अपने कार्य को अच्छी तरह से निभाने के लिए पर्याप्त शिक्षा हो, परन्तु प्रत्येक अपनी क्षमताओं के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। प्लेटो ने युवा वर्ग को धीरे–धीरे शाश्वत और परम सत्य और मूल्यों का साक्षात्कार कराने के लिए लाने में, अपने जीवन को त्रुटि, असत्य, पक्षपात और सच्चे मूल्यों के प्रति अंधेपन के छाया जगत में बिताने से बचाए जाने के लिए, शिक्षा की भूमिका के विशाल महत्व पर बल दिया। एक अन्य आलोचनात्मक मूल्यांकन था कि प्लेटो को पुरूषों और स्त्रियों की अपनी शख्सियत में समानता दिखाई दी। वह उन लोगों में से सर्वप्रथम था जिसने पुरूषों और स्त्रियों के लिए, उनके लिंग के आधार पर नहीं बल्कि उनकी सीखने की क्षमता के

आधार पर समान शिक्षा को प्रस्तावित किया। उसने स्त्रियों के दमन को मानव संसाधनों के अपव्यय के रूप में देखा जो संभाव्य उत्तम अभिभावकों तक समाज की पहुँच को वंचित करता है। रिपब्लिक में प्लेटो आदर्श राज्य के सामाजिक संगठन के दो तरीके स्पष्ट करना है; पहला यह कि अभिभावकता का कार्य पुरूषों और स्त्रियों, दोनों के द्वारा समान रूप से किया जाएगा, दूसरा यह कि अभिभावकों के लिए निजी परिवार और विवाह की संस्था का भी उन्मूलन किया जाएगा क्योंकि अभिभावक सम्पत्ति के स्वामी नहीं होते और बच्चों की देखभाल करना सामुदायिक जिम्मेदारी होती है। प्लेटो का विश्वास था कि राज्य के हित सर्वश्रेष्ठ तरीके से संरचित होते हैं यदि बच्चों को उनके जैविक माता–पिता के बजाय पूरा समाज पाले–पोसे और शिक्षित करे। अतः उसने अभिभावक वर्ग में बच्चों के जनन, पालन–पोषण और प्रशिक्षण के लिए एक योजना प्रस्तावित की। प्लेटो का मत था कि पारिवारिक जीवन के अनुमानित सुख कुछ ऐसे लाभ है; जिनका परित्याग करने के लिए समाज के उच्च वर्गों को तैयार रहना पड़ेगा।

## 4.6 कुछ उपयोगी संदर्भ


- अन्नास. जूलिया. (2003). *प्लेटो : ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- मुखर्जी. सुब्रत एण्ड सुशीला रामास्वामी. (2007). *ए हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल थॉट.* प्रेंटिस हॉल. इंडिया.
- क्राउट. रिचर्ड. (सं.) (1992). *दि केंब्रिज कम्पैनियन टु प्लेटो.* केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- पॉपर. के. आर. (1945). *दि ओपन सोसाइटी एण्ड इट्स एनिमीज़.* राउटलेज.
- बर्लिन. इज़ाइया. (1969). *फोर कॉनसेप्ट्स ऑफ लिबर्टी.* ऑसफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.


## 4.7 अपनी प्रगति जाँचें अभ्यासों के उत्तर

### अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 1

1) आपको उत्तर में निम्नलिखित तथ्यों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए
   - पारम्परिक विवाह ने स्त्रियों को अधीन कर दिया
   - पितृसत्तात्मक परिवार से स्त्रियों की मुक्ति पर जोर देता है

### अपनी प्रगति जाँचें अभ्यास 2

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित तथ्यों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए
   - सम्मानतंत्रात्मक
   - अल्पतांत्रिक
   - लोकतांत्रिक
   - अत्याचारी